विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ , लखीसराय

विषय -हिंदी ***दिनांक-30/05/2020***
वर्ग-पंचम ***वर्ग-शिक्षिका — नीतू कुमारी***

पाठ-3(क़दम्ब का पेड़)

सुप्रभात बच्चों,

पिछली कक्षा में आपने क़दम्ब का पेड़ कविता अध्ययन किया,हमें विश्वास है कि आपलोग कविता याद कर लिए होंगे। आज आपको उसी कविता का शेष भाग अध्ययन करना है।जो इस प्रकार हैं:—

गुस्सा होकर मुझे डाँटती ,कहती नीचे आ जा,
पर जब मैं न उतरता, हँसकर कहती-मुन्ना राजा!
नीचे उतरो मेरे भैया! तुम्हें मिठाई दूँगी,
नए खिलौने ,माखन-मिसरी,दूध-मलाई दूँगी।

मैं हँसकर सबसे ऊपर की टहनी चढ़ जाता,
एक बार ' माँ' कह पत्तों में वहीं कहीं छुप जाता।
बहुत बुलाने भी माँ जब मैं न उतरकर आता,
तब माँ,माँ का हृदय तुम्हारा बहुत विकल हो जाता।

तुम आँचल पसारकर अम्माँ ,वहीं पेड़ के नीचे,
ईश्वर से कुछ विनती करती ,बैठी आँखें मींचे।
तुम्हें ध्यान में लगा देख, मैं धीरे-धीरे आता,
और तुम्हारे फैले आँचल के नीचे छिप जाता।

तुम घबराकर आँख खोलती, फिर भी ख़ुश हो जाती,
जब अपने मुन्ने-राजा को गोदी में ही पाती।
इसी तरह कुछ खेला करते हम- तुम धीरे -धीरे
माँ क़दम का पेड़ अगर ये होता यमुना तीरे।

बच्चों दी गयी कविता को सुंदर अक्षरों में लिखें तथा याद करें।

गृहकार्य:—

शब्दार्थ लिखें और याद करें।
यमुना तीरे— यमुना नदी के किनारे
विकल — व्याकुल, बेचैन , दुःखी
कन्हैया — कृष्ण
विनती — प्रार्थना
हृदय — दिल
आँखें मींचे — आँखें बंद करके